(2) जैन या अपभ्रंश शैली — इसे गुजरात शैली और पश्चिमी भारत शैली भी कहते हैं। यह चित्र पूर्णतः जैनधर्म से संबंधित नहीं हैं किंतु यह माना जाता है कि जैन भिक्षुओं द्वारा इन्हें बनाया गया।

(घ) मुगलकालीन कला – (1550 ई० से 1800 ई० तक) — मुगलकालीन कला को चार शैलियों में विभक्त किया जा सकता है – ईरानी शैली, अकबर कालीन शैली, जहाँगीर कालीन शैली और शाहजहाँकालीन शैली।

(1) ईरानी शैली — ईरानी और भारतीय शैली के मिश्रण से जो शैली बनी वह मुगल शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। ईरान की 'हिरात शैली' बाबर के साथ भारत आई। इस समय के चित्रों में अलंकारिता, उत्कृष्ट रंग समायोजन, प्रकाश एवं छाया का प्रयोग तथा ज्यामितीय चित्रण है।

अक्षर लेखन सुंदर व सुचारु है इसे Indo - Percian Painting कहकर पुकारते हैं।

(2) अकबर कालीन शैली — अकबर अत्यंत कलाप्रेमी राजा थे। उन्होंने चित्रशालाएं बनवाई, सियालकोट (पंजाब) में कागज का कारखाना लगवाया। उस काल में स्वच्छंद एवं उन्मुक्त चित्रण हुआ। इस काल के चित्रों में परिप्रेक्ष्य (Perspective) का प्रयोग हुआ है, रंग पारदर्शक और चमकीले प्रयोग किए गए हैं, वेशभूषा

(3) जहाँगीर कालीन शैली — इस काल की कला मुगलकालीन कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। इसमें कला पर यूरोपियन प्रभाव मिलता है, इसी कारण यथार्थवादी अंकन हुआ है। प्रकृति के नाना रूपों का प्रदर्शन, चित्रों में स्वाभाविकता, छाया - प्रकाश का प्रयोग, बारीक व महीन काम, परिप्रेक्ष्य का प्रयोग, रंगों की तानों का प्रयोग, सोने व चाँदी के रंगों का प्रयोग और व्यक्ति

चित्रण इस काल की कला की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(4) शाहजहाँकालीन शैली — इस काल में भवन निर्माण शैली के उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं। शाहजहाँ ने मोती मस्जिद, जामा मस्जिद, आगरे का लाल ~~किला~~ किला और ताजमहल बनवाए जो उसके कला प्रेम के प्रत्यक्ष रूप हैं। इनमें मुगल वैभव दिखाई पड़ता है। छज्जों, बरामदों, फर्शों पर महीन कारीगरी, आभूषणों पर पच्चीकारी अद्वितीय है। उसने अंतःपुर के चित्र, व्यक्ति चित्र तथा कवियों और गायकों के चित्र भी बनवाए।

(ज) राजपूत शैली — आनंदकुमार स्वामी ने राजपूताना, पंजाब तथा हिमालय की पहाड़ियों में 16वीं शताब्दी में मुगलकाल के समानान्तर विकसित होती हुई कला को राजपूत शैली का नाम दिया जिसमें राजस्थानी कला एवं पहाड़ी कला आती है। यह